International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

"विदिशा के ऐतिहासिक पर्यटन में रोजगार की संभावनाओं का विश्लेषण"

शिव कुमारी रघुवंशी[1], डॉ. संध्या भार्गव[2]

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक

सारांश -

विश्व में पर्यटन के विकास को वर्तमान स्तर तक पहुँचने में हजारों वर्ष लगे हैं। यह मनुष्य के अपने पर्यावरण एवं परिवेश के साथ विभिन्न प्रकार की पारस्परिक क्रियाओं का परिणाम रहा है और इसका विभिन्न स्तरों पर विकास हुआ है। प्राचीन काल से शिक्षा एवं धर्म को पर्यटन की वृद्धि के घटकों के तौर पर देखा जाता रहा है। पर्यटन को व्यापार एवं वाणिज्य की बढ़ती जरूरत से भी प्रोत्साहन मिला है। इसलिए हमने अतीत में सिल्क एवं गरम मसाले के व्यापार की बातें सुनी हैं और वर्तमान में भी वे हमारा ध्यानाकर्षित कर रही हैं।

मध्य प्रदेश का विदिशा शहर एक ऐतिहासिक शहर है और इतिहास प्रेमियों के लिए स्वर्ग है।यह शहर अपनी विविध संस्कृति और स्थापत्य कला के चमत्कारों पर गर्व करता है। यह बौद्ध धर्म के एक प्रमुख केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण था और मौर्यों और गुप्तों जैसे प्राचीन राजवंशों के साथ हमेशा संपर्क में रहा। यहाँ के मंदिर प्रभावशाली हैं, खंडहर प्राचीन काल के गौरव को दर्शाते हैं, जबकि मूर्तियाँ दृश्य पाठ के रूप में प्रस्तुत होती हैं। यह ऐतिहासिक स्थल न केवल सांस्कृतिक धरोहर है बल्कि विदिशा की आर्थिक रीढ़ की हड्डी भी है। जो कई क्षेत्रों में रोजगार प्रदान करते हैं और भविष्य में असीम रोजगार की संभावनाएं हमें दिखाई देती है|

मूल शब्द - रोजगार, विदिशा, ऐतिहासिक, पर्यटन, नगर, संस्कृति, स्थापत्य|

प्रस्तावना -

पर्यटन को 21वीं सदी में एक महत्वपूर्ण और महत्त्वपूर्ण सेवा उद्योग के रूप में देखा जाता है। पर्यटन देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि करता है। यह विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सहायक होता है। आज के आधुनिक युग में, पर्यटन ने व्यक्ति, परिवार और समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों से एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है।

कहा जाता है कि 'कुछ करने से देश बनता है...इंसान को बहुत सी चतुराई हासिल होती है।' एक व्यक्ति कई तरीकों से चतुराई हासिल कर सकता है, जैसे पर्यटन और सामाजिक समारोह; लेकिन पर्यटन उद्योग को भी कई तरह से लाभ पहुँचा सकता है, जो आज के उद्योग में इसकी उच्च आर्थिक स्थिति से आसानी से देखा जा सकता है। पर्यटन आज के जीवन की यांत्रिक और नीरस प्रकृति को दूर कर सकता है। नए क्षेत्रों, नई

सामाजिक प्रणालियों, विभिन्न विचारधाराओं का पालन करने वाली जनजातियों, प्रकृति और ऐतिहासिक स्मारकों की भव्यता आदि को देखकर, एक व्यक्ति अपने जीवन का अर्थ समझने लगता है। पर्यटन जाति, धर्म और अन्य मतभेदों की बाधाओं को कम करने में मदद करता है। हम सब एक हैं, इस एकता की भावना मजबूत होने लगती है।

पर्यटन देश की विभिन्न स्थानीय कलाओं को बढ़ावा देता है। स्थानीय व्यवसायों के विकास के साथ-साथ, पर्यटन स्थानीय रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे सरकार की दैनिक आय में वृद्धि होती है। संक्षेप में, यह राष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण कार्य पूरा करता है।
यद्यपि पर्यटन एक आधुनिक अवधारणा है, फिर भी इसका विकास मानव विकास के विभिन्न कालखंडों में हुआ है। इतिहास में हमें इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव ने अनादि काल से ही विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और अन्य उद्देश्यों के लिए पर्यटन की शुरुआत की है।
संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO-UN World Tourism Organization) -"पर्यटन में अवकाश, व्यापार एवं अन्य उद्देश्यों के लिए अधिकतम एक वर्ष तक के समय तक अपने सामान्य परिवेश से बाहर के स्थानों पर यात्रा करने एवं रहने वाले व्यक्तियों की गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।[1]

" राष्ट्र संघ के अनुसार, "विदेशी पर्यटक वह व्यक्ति है जो किसी देश का दौरा करता है और कम से कम 14 घंटे तक रहता है।**"**

कार्डिफ़ टूरिज्म एसोसिएशन के अनुसार, "पर्यटन एक स्वैच्छिक और निश्चित गतिविधि है जो किसी व्यक्ति द्वारा घर से बाहर की जाती है। इस प्रक्रिया में, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि व्यक्ति घर से दूर रहा है या नहीं।[2]

हर्मर के अनुसार, "पर्यटन किसी देश, क्षेत्र या शहर में विदेशी का आगमन, निवास, भ्रमण और प्रस्थान है।"
हरमन शूलार्ड, "पर्यटन एक आर्थिक कार्यक्रम है जो लोगों की प्रत्यक्ष घरेलू या विदेशी यात्रा, निवास, भ्रमण और गतिशीलता से संबंधित है।"[3]
विभिन्न स्थानों पर पर्यटन के हमें कई प्रकार मिलते हैं मुख्यतः पर्यटन के प्रकार निम्न प्रकार से है-

विदिशा की भौगोलिक अवस्थिति -

विदिशा नगर, राजधानी दिल्ली-मुंबई एवं चेन्नई-दिल्ली प्रमुख ब्राड गेज रेलवे लाइन पर प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 54 किलोमीटर की दूरी पर 23°-31° उत्तरी अक्षांश तथा
77°-50° पूर्वी देशांश पर समुद्र तल से लगभग 428 मीटर ऊंचाई पर अवस्थित होकर बेतवा नदी (वैत्रवती) के पूर्वी तट पर बसा हुआ है। भोपाल-विदिशा-सागर को मिलाने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-86 नगर के मध्य से गुजरता है। सड़क मार्ग से विदिशा-भोपाल के बीच की दूरी 78 किलोमीटर है। कर्क रेखा नगर से लगभग 2 किलोमीटर दक्षिण से होकर गुजरती है। विदिशा नगर, भोपाल राजस्व संभाग का जिला एवं तहसील मुख्यालय है तथा रेल मार्ग के साथ-साथ सड़क मार्ग द्वारा प्रदेश एवं देश के प्रमुख नगरों से सीधे जुड़ा हुआ है। विदिशा जिले के पूर्व में सागर, उत्तर में गुना, पश्चिम में राजगढ़ और दक्षिण में रायसेन एवं भोपाल जिले स्थित है।[4]

ऐतिहासिक अवधारणा -

पुरातत्वीय तथा ऐतिहासिक दृष्टि से विदिशा जिला अपनी विशेष महत्ता रखता है। जिले में सर्वत्र फैली पुरातत्वीय सम्पदा इस क्षेत्र के प्राचीन गौरव की साक्षी है। यह स्थान न केवल प्रागैतिहासिक काल में, अपितु पूरवर्ती ऐतिहासिक काल में भी महत्वपूर्ण था जबकि यह अनुश्रुतियों का विषय बन गया था। विदिशा को भद्रवती के नाम से जाना जाता है।

ब्राह्मण, बौद्ध और जैन साहित्य में विदिशा का उल्लेख बेस्य नगर, वैश्य नगर, विश्व नगर, बेस नगर, विदिशा, वैदिशा आदि नामों से किया गया है। बेस नगर प्राचीन काल में वैसे और वैत्रवती (बेतवा) नदियों के बीच स्थित था। जीवक के यात्रा वर्णन में, जिसे अजातशत्रु के मगध दरबार की ओर से अवन्ति नरेश चन्द्रप्रद्धोत से संधि करने के लिये भेजा गया था, विदिशा, उज्जैन तथा माहिष्मति का उल्लेख मिलता है। इससे सिद्ध

होता है कि जीवक ने निश्चय ही अनेक व्यापारिक मार्गों में से किसी एक मार्ग से यात्रा की होगी, व्यापारिक मार्गों का केन्द्र होने के फलस्वरूप विदिशा शनैः शनैः प्राचीन भारत के समृद्ध नगरों में शामिल हो गया था। नगर में ऐतिहासिक नगरी में भेलसा की तोप भी प्रसिद्ध है।[5]

संस्कृत साहित्य में पूर्वी मालवा, जिसमें विदिशा क्षेत्र भी शामिल था, बौद्ध तथा परवर्ती काल में सांस्कृतिक गरिमा के चरमोत्कर्षपर पहुंच गया था। इसका स्वर्ण युग निश्चय ही अशोक के शासन काल से गुप्त साम्राज्य तक रहा होगा।[6]

18वीं शताब्दी में मालवा सूबेदार सवाई जयसिंह ने भैलसा, भोपाल नवाब को दे दिया, परन्तु तुकोजी तथा जीवाजी पवार बन्धुओं ने पन्द्रह दिन घेराबंदी कर 11 जनवरी 1737 को विदिशा पर अपना अधिकार कर लिया। सन् 1757 ई. में अहमदशाह अब्दाली के भारत पर आक्रमण, में मराठे उलझे रहे तथा भोपाल नवाब की सेना ने विदिशा पर अधिकार कर लिया। मराठों ने सन् 1761 में पुनः इसे अपने आधिपत्य में ले लिया। इस प्रकार विदिशा भू-भाग का आधिपत्य अनेक बार मराठों तथा भोपाल रियासत के बीच आता-जाता रहा। अंततः 1775 में विदिशा, भूतपूर्व ग्वालियर रियासत के भाग के रूप में शामिल हो गया। नगर की पुरानी बस्ती के चारों ओर इतिहासकाल के किले की दीवार के भग्नावशेष आज भी यहां देखे जा सकते हैं।
15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के साथ ग्वालियर, इन्दौर तथा मालवा की अन्य रियासतों के शासकों ने 22 अप्रैल, 1948 को प्रासंविदा पर हस्ताक्षर किए और 28 मई, 1948 को मध्य भारत संघ बना इस प्रकार सिरोज उप संभाग को छोड़कर वर्तमान विदिशा जिला, मध्य भारत का भाग बन गया।[7]
1 नवम्बर, 1956 को राज्यों को पुनर्गठन के परिणामस्वरूप विदिशा जिले को नये मध्यप्रदेश के जिले के रूप में शामिल किया गया। इस अवसर पर सिरोंज और लटेरी, जो राजस्थान से मध्यप्रदेश को अंतरित किए गए थे, उन्हें विदिशा जिले की तहसीलों के रप में सम्मिलित किया गया।[8]

प्राचीन काल , मध्यकाल और आधुनिक काल से ही विदिशा सर्व संपन्न था । साथ यहां आर्थिक गतिविधियों के साथ यह कई राजवंशों की राजधानी रही है। विभिन्न धार्मिक , ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल होने से यहां पर्यटन की संख्या में वृद्धि देखी जाती है । जो विदिशा में रोजगार के अवसर प्रदान करता है ऐसे ही मुख्य रूप से विदिशा में कुछ मुख्य ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है जिनको हम जानेंगे -

1. उदयगिरि गुफाएँ

उदयगिरि गुफाओं के नाम से जानी जाने वाली कई चट्टानी गुफाएँ चौथी से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी तक फैली हुई हैं। ये अपनी असाधारण मूर्तिकला के कारण प्रसिद्ध हैं, जिसमें भगवान विष्णु का वराह (जंगली सूअर) अवतार भी शामिल है। ये गुफाएँ नक्काशी और शिलालेखों का खजाना हैं जो प्राचीन भारत की कला, धर्म और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

2. सांची स्तूप

साँची स्तूप भारत में स्थित है और एक उल्लेखनीय बौद्ध संरचना है जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। इस स्तूप का निर्माण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के राजसिंहासन पर रहते हुए हुआ था। इसके प्रवेश द्वार पर अत्यंत विस्तृत नक्काशी है जहाँ बुद्ध के जीवन से जुड़ी विभिन्न घटनाओं

को दर्शाया गया है। इस क्षेत्र में और भी स्तूप, मठ और मंदिर हैं जो भारत के बौद्ध इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।[9]

3. विदिशा किला

एक पहाड़ी पर स्थित विदिशा किले से शहर और उसके आसपास के मनोरम दृश्य देखे जा सकते हैं। खंडहर होने के बावजूद, यह ऐतिहासिक महत्व रखता है, ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण परमारों के शासनकाल में हुआ था। किले की दीवारें और मीनारें खंडहर के रूप में मौजूद हैं, जिन्हें देखकर पर्यटक उस समय की सैन्य वास्तुकला के बारे में कुछ जान सकते

4. अशोक स्तंभ

साँची के निकट स्थित, अशोक स्तंभ एक भव्य स्मारक है जो सम्राट अशोक के शासन और बौद्ध धर्म के उनके प्रचार का प्रमाण है। इस जटिल नक्काशीदार स्तंभ पर सिंह शीर्ष अंकित है, जो आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है। अपने ऐतिहासिक महत्व और कलात्मक निपुणता के कारण, यह स्तंभ प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में जानने के इच्छुक पर्यटकों को आकर्षित करता है।

5. गिरधारी मंदिर

मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा में स्थित गिरधारी मंदिर, भगवान कृष्ण का एक प्राचीन हिंदू मंदिर है। अपनी उत्कृष्ट पत्थर की नक्काशी और जटिल वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध, यह सुंदर मंदिर 11वीं शताब्दी में निर्मित है। इस मंदिर में उस समय के विशिष्ट देवी-देवताओं की सुंदर नक्काशीदार प्रतिमाएँ हैं।

6. मालादेवी मंदिर

मध्य प्रदेश के विदिशा में मालादेवी मंदिर स्थित है, जो देवी मालादेवी की पूजा को समर्पित सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है। यह छठी शताब्दी का मंदिर अपनी शानदार शैल-कटाई और सजावटी पत्थर की नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर में उस काल में विकसित की गई सुंदर शिल्पकृतियाँ और स्थापत्य कला की सजावटी कलाकृतियाँ हैं। इस मनोरम दृश्य के साथ, यह भक्तों के लिए प्रार्थना और ध्यान करने हेतु एक शांत वातावरण प्रदान करता है। मालादेवी मंदिर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की दृष्टि से इस क्षेत्र के उल्लेखनीय मंदिरों में से एक है।

7. पुरातत्व संग्रहालय

विदिशा स्थित पुरातत्व संग्रहालय कलाकृतियों, मूर्तियों और शिलालेखों का एक अनमोल खजाना है जो शहर के इतिहास की समृद्धि को दर्शाता है। विभिन्न कालखंडों की कलाकृतियों से भरपूर इस संग्रहालय में पास के साँची से प्राप्त उत्कृष्ट मूर्तियाँ और प्राचीन मंदिरों के अवशेष भी प्रमुखता से प्रदर्शित हैं। ये न केवल कलात्मक वैभव को दर्शाते हैं, बल्कि क्षेत्रीय संस्कृति और प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं को भी दर्शाते है।[9]

8. हिंडोला तोरण

मध्य प्रदेश के विदिशा शहर में स्थित हिंडोला तोरण, ग्यारहवीं शताब्दी की प्रारंभिक भारतीय वास्तुकला के अपने महत्वपूर्ण उदाहरण के कारण निस्संदेह दर्शकों की प्रशंसा जीत लेगा। इस अलंकृत प्रवेश द्वार की विशिष्ट विशेषता ढलानदार मेहराब हैं जो झूले के आकार के हैं, इसीलिए इसका नाम "हिंडोला" पड़ा है जिसका हिंदी में अर्थ झूला होता है। तोरण पर देवताओं की सुंदर पत्थर की मूर्तियाँ और जटिल आकृतियाँ उकेरी गई हैं, जो उस समय की कला को दर्शाती है।

9. स्थानीय उत्सव

दिवाली और होली के उत्सवों के अलावा, अन्य स्थानीय मेलों में पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ जीवंत नृत्य और जीवंत संगीत का प्रदर्शन होता है जो समुदाय की विरासत का प्रतीक है। ऐसे अवसरों में शामिल होने से विदिशा की संस्कृति के महत्व को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है क्योंकि इससे समाज के उन सदस्यों के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है जो इसके बारे में अधिक जानते हैं। ये उत्सव इस खूबसूरत शहर की विशिष्ट प्रथाओं से परिचित होने का एक माध्यम बनते हैं, जो इसे विदिशा में घूमने लायक जगहों में से एक बनाता है।

10. बीजा मंडल

विदिशा बीजा मंडल एक प्राचीन मंदिर स्थल है जो अपनी सुंदर वास्तुकला और विस्तृत नक्काशी के लिए जाना जाता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और इसमें उत्कृष्ट कलाकृतियाँ हैं जो उस युग की कलाकृतियों का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह मंदिर उनकी सुंदरता से आच्छादित है और उन आगंतुकों का ध्यान रखता है जो अपनी त्वचा के भीतर शांति का आनंद लेना चाहते हैं। इस स्थल से जुड़ी कई लोककथाएँ और मिथक हैं|

11. खंबा बाबा/हेलियोडोरस स्तंभ

अपने अविश्वसनीय ऐतिहासिक रत्नों के लिए प्रसिद्ध विदिशा में आपको हेलियोडोरस स्तंभ या स्थानीय लोग इसे 'खंबा बाबा' कहते हैं, देखने को मिलेगा। विदिशा के सबसे प्राचीन रत्नों में से एक, यह प्राचीन पत्थर का स्तंभ, जो लगभग 113 ईसा पूर्व का है, हेलियोडोरस नामक एक यूनानी व्यक्ति द्वारा स्थापित किया गया था। यह प्रारंभिक हिंदू पूजा पद्धति को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है|

12. बीजामंडल मंदिर/विजयमंदिर मंदिर

विजयमंदिर मंदिर, जिसे बीजामंडल के नाम से भी जाना जाता है, मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है और विदिशा घूमने के लिए बेहतरीन जगहों में से एक है। यह ऐतिहासिक स्थल 11वीं शताब्दी के एक हिंदू मंदिर के रूप में अस्तित्व में आया था, जिसे 17वीं शताब्दी में मस्जिद में बदल दिया गया था। इसके खंडहरों में घूमते हुए, आपको बिखरी हुई मूर्तियाँ और सुंदर नक्काशीदार स्तंभ दिखाई देंगे।

13. लोहांगी पीर

लोहांगी पीर विदिशा के शानदार पर्यटन स्थलों में से एक है। एक बड़ी चट्टान पर स्थित, आपको सूफी संत शेख जलाल चिश्ती की शांत कब्र, पुराने फ़ारसी लेख और एक हिंदू मंदिर के कुछ अंश देखने को मिलेंगे। यह संस्कृतियों का एक सच्चा मिश्रण है। वहाँ से आपको विदिशा शहर के अद्भुत दृश्य दिखाई देंगे, जो तस्वीरों के लिए एकदम सही हैं। सबसे अच्छे मौसम के लिए अक्टूबर और मार्च के बीच यहाँ जाएँ। यह आपके मध्य प्रदेश के रोमांच को और बढ़ाने के लिए एक बेहतरीन जगह है।[10]

14. हलाली बांध/सम्राट अशोक सागर बांध

हलाली बांध, जिसे सम्राट अशोक सागर भी कहा जाता है, भोपाल और रायसेन के बीच स्थित है। यह एक शांत दिन बिताने के लिए एक खूबसूरत जगह है। आप शांत पानी में आराम से नाव की सवारी का आनंद ले सकते हैं|

पर्यटन उद्योग के घटक –

मध्यप्रदेश में पर्यटक –

वर्ष	मध्यप्रदेश में पर्यटकों की संख्या
2023	11,21,29,094
2022	3,41,38,757
2021	2,55,95,668
2020	2,55,95,668
2019	8,90,35,097
2018	8,46,14,456
2017	5,88,62,584

मध्य प्रदेश में लगातार पर्यटन की संख्या में वृद्धि हो रही है 2023- 2024 में आप देख सकते हैं कि पर्यटक लगातार वुद्धि हुई है, अब केवल यह कार्य विदिशा जिले के प्रशासनिक निगम एवं स्थानीय नागरिकों का यह कर्तव्य है कि वह अपने ऐतिहासिक स्थलों का इस प्रकार प्रदर्शन करें की वह एक अभिव्यक्ति लगे एवं विश्व पटल पर उनकी पहचान विकसित करने का कार्य करें ताकि विदिशा में रोजगार के अवसर बढ़ सके जिसे विदिशा रोजगार की मुख्य धारा में शामिल हो सके ।

आधुनिक समय में पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। यह बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करता है। पर्यटन स्थल स्थानीय निवासियों की आय का मुख्य स्रोत हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि किसी देश में पर्यटन का जितना अधिक विकास होता है, उतना ही यह उस देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है। पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का सबसे अच्छा साधन है। अतः भारत सरकार और विभिन्न राज्यों के सरकारी पर्यटन बोर्डों को पर्यटन के विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. कोटेन, एलर्ट , तीसरी दुनिया मे पर्यटन, 1993 पृ - 4
2. अंसारी. ए. ए. पर्यटन में बदलते प्रतिमान उद्योग, २008, पृ - 16
3. कट्टीमनी. डां, पुस, आर. ऐतिहासिक पर्यटन" कोल्हापुर 2003 , पृ -11
4. कुमार, अमितेश, विदिशा का ऐतिहानिक महत्व, मालवा, 2004, पृ - 1
5. जोशी बी.जी. विदिशा के प्रमुख पुरातात्विक स्थल, ISSN-2456.5474 , पृ -2
6. विदिशा विकास योजना-2011 , संचालनालय - नगर तथा ग्राम निवेश, मध्यप्रदेश, पृ - 36
7. भाटिया, नीतेराठौर, विदिशा के प्रमुख पुरातात्विक स्थल एवं उनका पर्यटन महत्व : एक ऐतिहासिक विवेचन (2018) पृ. 09
8. अली, रहमान ,मालवा क्षेत्र की कला और वास्तुकला, शारदा भवन, २004 पृ. 14
9. विदिशा विकास योजना-2035 - संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेस. पृ - 36
10. मध्यप्रदेश राजपत्र आदेश 26 फरवरी 2021
11. खरे, मरेश्वरी दयाल, विदिशा, मप्र हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2009, पृ - 36
12. https://vidisha.nic.in
13. https://m.punjabkesari.in/dharm/news/vidisha-1807254?amp